कार्ल मार्क्स

जीवन और शिक्षाएँ

ज़ेल्डा काहन-कोट्स

ज़ेल्डा काहन-कोट्स लिखित

कार्ल मार्क्स : जीवन और शिक्षाएँ

यह पुस्तक राहुल फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित की गई है व प्रगतिशील साहित्य के वितरक जनचेतना द्वारा कम से कम दामों में जनता तक पहुँचाई जा रही है। अगर आप पीडीएफ की बजाय प्रिण्ट कॉपी से पढ़ना चाहते हैं तो जनचेतना से खरीद सकते हैं।

ऑनलाइन लिंक : http://janchetnabooks.org/product/karl-marx-jeevan-aur-shikshayen

जनचेतना सम्पर्क : D-68, Niralanagar, Lucknow-226020
0522-4108495; 09721481546
janchetna.books@gmail.com
Website - http://janchetnabooks.org

इस पीडीएफ फाइल के अंत में जनचेतना द्वारा वितरित किये जा रहे प्रगतिशील, मानवतावादी व क्रान्तिकारी साहित्य की सूची भी दी गयी है।

हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- सुबह-सुबह प्रगतिशील कविताएं, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य पीडीएफ में
- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- हर रविवार किसी महत्वपूर्ण पुस्तक की पीडीएफ

मजदूर बिगुल व्हाटसएप्प चैनल से जुड़ने के लिए इस लिंक का इस्तेमाल करें

www.mazdoorbigul.net/whatsapp

जुड़ने में समस्या आने पर अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें – 9892808704

वैकल्पिक नम्बर : 9619039793

फेसबुक पेज : fb.com/unitingworkingclass

टेलीग्राम चैनल : www.t.me/mazdoorbigul

कार्ल मार्क्स
जीवन और शिक्षाएँ

ज़ेल्डा काहन-कोट्स

राहुल फ़ाउण्डेशन
लखनऊ

ISBN 978-93-80303-01-7

मूल्य : रु. 25.00

पहला संस्करण : जनवरी 2017

प्रकाशक : **राहुल फ़ाउण्डेशन**
69 ए–1, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज,
लखनऊ–226 006 द्वारा प्रकाशित

आवरण : **रामबाबू**

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : लक्ष्मी ऑफ़सेट प्रेस, इन्दिरानगर, लखनऊ

Karl Marx: Jeevan aur Shikshayein *by* ***Zelda Kahan-Coates***

प्रकाशकीय

मानव मुक्ति का वैज्ञानिक दर्शन और विचारधारा देने वाले विश्व सर्वहारा के महान शिक्षक कार्ल मार्क्स की यह प्रसिद्ध जीवनी हिन्दी में प्रस्तुत करते हुए हमें बेहद ख़ुशी हो रही है।

मार्क्स और उनके अभिन्न मित्र एंगेल्स ने सर्वहारा वर्ग के शोषण और पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली में अन्तर्निहित अराजकता एवं अन्तरविरोधों को उजागर करते हुए यह दिखलाया कि किस तरह पूँजीपति द्वारा हड़पा जाने वाला अतिरिक्त मूल्य मज़दूरों के शोषण से आता है। उन्होंने राजनीति, साहित्य-कला-संस्कृति, सौन्दर्यशास्त्र, विधिशास्त्र, नीतिशास्त्र – सभी क्षेत्रों में चिन्तन एवं विश्लेषण की द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी पद्धति को स्थापित करके वैज्ञानिक समाजवाद के विचार को समृद्ध किया। मार्क्स और एंगेल्स ने अपने समय की पूँजीवादी क्रान्तियों, सर्वहारा संघर्षों और उपनिवेशों में जारी प्रतिरोध संघर्षों एवं राष्ट्रीय मुक्तियुद्धों का सार-संकलन किया, मज़दूर आन्दोलन को सिर्फ़ सुधारों तक सीमित रखकर मूल लक्ष्य से च्युत कर देने के अवसरवादियों के प्रयासों की धज्जियाँ उड़ा दीं, पूँजीवादी बुद्धिजीवियों और भितरघातियों की संयुक्त बौद्धिक शक्ति का मुक़ाबला करते हुए राज्य और क्रान्ति के बारे में मूल मार्क्सवादी स्थापनाओं को निरूपित किया और सर्वहारा वर्ग के दर्शन को समृद्ध करने के साथ ही उसे रणनीति एवं रणकौशलों की एक मंजूषा भी प्रदान की। उन्होंने सर्वहारा क्रान्ति के बुनियादी नियमों की मीमांसा प्रस्तुत की। ऐसा करते हुए मार्क्स-एंगेल्स ने सर्वहारा वर्ग को संगठित करने के प्रयास लगातार जारी रखे और पहले इण्टरनेशनल के गठन में नेतृत्वकारी भूमिका निभायी। सर्वहारा वर्ग द्वारा राज्यसत्ता पर क़ब्ज़ा करने के पहले महाकाव्यात्मक प्रयास का समाहार करते हुए मार्क्स ने पहली बार पूँजीवादी राज्य और उसके स्थान पर स्थापित होने वाले सर्वहारा अधिनायकत्व के आधारभूत सिद्धान्त विकसित किये। मार्क्स की मृत्यु के बाद एंगेल्स ने उनके अधूरे सैद्धान्तिक कामों को पूरा किया, सर्वहारा विचारधारा की हिफ़ाज़त की और मार्क्स के अवदानों का वस्तुपरक ऐतिहासिक मूल्यांकन करते हुए उन्होंने ही उसे मार्क्सवाद का नाम दिया।

ज़ेल्डा कोट्स की लिखी मार्क्स की यह छोटी-सी जीवनी गागर में सागर भरने की तरह पाठक के सामने मार्क्स के जीवन की एक तस्वीर पेश करने के साथ ही उनकी प्रमुख कृतियों और शिक्षाओं से परिचय भी कराती चलती है। ज़ेल्डा कोट्स ने एंगेल्स की भी ऐसी ही शानदार जीवनी लिखी है जिसे हम पहले ही राहुल फाउण्डेशन से

प्रकाशित कर चुके हैं।

ज़ेल्डा काहन (1886-1969) एक ब्रिटिश कम्युनिस्ट थीं। उनका जन्म रूस में हुआ था लेकिन बचपन में ही उनका परिवार ब्रिटेन जाकर बस गया था। युवावस्था में ही वह एक सक्रिय समाजवादी बन गयी थीं और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ ग्रेट ब्रिटेन की स्थापना में भूमिका निभायी। एक कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ता विलियम पेयटन कोट्स से शादी के बाद उनका नाम ज़ेल्डा काहन-कोट्स हो गया। उन्होंने कम्युनिज़्म को लोकप्रिय बनाने और सोवियत संघ के बारे में कई पुस्तकें लिखीं। हमें आशा है कि पाठकों को मार्क्स के जीवन और विचारों से परिचित कराने में यह बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

—— राहुल फ़ाउण्डेशन

20.12.16

अनुवादक की ओर से

मार्क्स के समर्थकों और विरोधियों दोनों में ही एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है जिनका समर्थन या विरोध मार्क्स और मार्क्सवाद के बारे में प्रत्यक्ष व्यक्तिगत जानकारी और समझ के बजाय सुनी-सुनायी बातों पर आधारित होता है। मार्क्स के स्वयं के लेखन और उनके बारे में लिखी गयी सामग्री को पूरी तरह पढ़कर समझने लायक अवकाश एवं धैर्य बहुत कम लोगों के पास होता है। ऐसे में कुछ ऐसी सामग्री की आवश्यकता अनुभव होती है जो कम समय और कम परिश्रम में जनसामान्य को मार्क्स और मार्क्सवाद की बुनियादी समझ से लैस कर सके। जो मार्क्सवाद की प्रवेशिका या 'प्राइमर' की भूमिका निभा सके। हिन्दी में शिववर्मा और सव्यसाची ने इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किये हैं। परन्तु उनके लेखन की अपनी सीमाएँ हैं।

कुछ प्रबुद्ध मित्रों के सुझाव और सहयोग से जेल्डा काहन कोट्स लिखित मार्क्स की जीवनी जब उपलब्ध हुई तो लगा कि यह पुस्तक यदि हिन्दी में सुलभ हो तो एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हो सकती है। यह पुस्तक मार्क्स के जीवन-संघर्ष और उनकी विचारधारा को अत्यन्त सरल-सहज और संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करती है। यह तय हुआ कि इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करके उसे प्रकाशित किया जाये। अनुवाद हो भी गया। परन्तु अपरिहार्य कारणों से प्रकाशन टलता रहा और लगभग तीन वर्ष का लम्बा समय निकल गया। इसी बीच एक अन्य सज्जन से सम्पर्क हुआ जो प्रकाशन की दुनिया में प्रवेश करने जा ही रहे थे। उनसे बात करके ऐसा लगा कि यह जीवनी जनसुलभ मूल्य पर प्रकाशित हो जायेगी और मैंने अपनी स्वीकृति दे दी। प्रकाशन हो भी गया। परन्तु जल्दी ही कुछ ऐसा लगने लगा कि सब कुछ इतना आसान नहीं होता। पुस्तक का मूल्य भले ही कम रखा गया था परन्तु सुलभ वह अब भी नहीं हो पा रही थी। एक आध मित्र ने शिकायत की तो मैंने उन्हें अपने पास से एक प्रति दे दी। परन्तु सभी लोग तो मुझसे कह भी नहीं सकते थे (क्योंकि पुस्तक में मेरा कोई सम्पर्क

सूत्र दिया ही नहीं गया था) न ही मैं उन सबको अपने पास से प्रतियाँ वितरित कर सकता था। ऐसे में इस पुस्तक के अनुवाद और प्रकाशन का मूल उद्देश्य ही निष्फल हुआ जा रहा था।

राहुल फ़ाउण्डेशन के साथी पिछले 20 वर्षों से मार्क्सवादी और प्रगतिशील साहित्य के प्रकाशन के काम को बहुत व्यवस्थित ढंग से कर रहे हैं और ऐसे साहित्य को व्यापक स्तर पर लोगों को सुलभ कराने के लिए काम कर रहे हैं। यहाँ से इस पुस्तक का प्रकाशन इस अनमोल कृति को हिन्दी के पाठकों के लिए सर्वसुलभ बनायेगा ऐसी आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास भी है।

– अमर नदीम

20 दिसम्बर 2016

पता: 7, सरस्वती विहार, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001
फोन: 9756720422 ईमेल: amarjyoti55@gmail.com

कार्ल मार्क्स – जीवन और शिक्षाएँ

कार्ल मार्क्स का जन्म 5 मई 1818 को ट्रीव्ज में हुआ था। उनके पिता स्थानीय अदालत में एक प्रमुख यहूदी वकील और पब्लिक नोटरी थे। वे एक प्रतिभा के धनी, उच्च-शिक्षा प्राप्त और 18वीं शताब्दी के फ़्रांस के प्रगतिशील विचारों से ओतप्रोत व्यक्ति थे। 1824 में प्रशाई के एक सरकारी फ़रमान के अनुसार सारे यहूदियों के लिए बपतिस्मा करवाना (ईसाई बनना) अनिवार्य कर दिया गया और इस फ़रमान के उल्लंघन का दण्ड था सारे राजकीय पदों/हैसियतों से हाथ धो बैठना। एक स्वतन्त्र चिन्तक और वाल्तेयर के अनुयायी होते हुए भी मार्क्स के पिता ने अपना व्यवसाय छोड़ने और इस तरह अपने परिवार को बरबाद करने की अपेक्षा फ़रमान के आगे समर्पण करने का रास्ता चुना। कार्ल मार्क्स की माँ हंगेरियन मूल की एक डच यहूदी महिला थीं जिनके पूर्वज यहूदी धर्मगुरु हुआ करते थे।

कम उम्र में ही कार्ल मार्क्स की प्रखर बौद्धिक सम्भावनाएँ ज़ाहिर हो गयी थीं और सौभाग्य से उनके माता-पिता उनके सांस्कृतिक विकास के लिए सभी प्रोत्साहन और अवसर उपलब्ध कराने में समर्थ थे। उनके पिता ने उन्हें रेसिन और वाल्तेयर पढ़कर सुनाये और कम उम्र में ही फ़्रांसीसी गौरव-ग्रन्थों से परिचित करा दिया; और दूसरी ओर उनकी भावी पत्नी के पिता लुडविग वॉन वेस्टफालेन के घर पर उन्होंने होमर और शेक्सपियर से प्यार करना सीखा। श्रमजीवी वर्ग के प्रति उनकी गहरी हमदर्दी, और उनका क्रान्तिकारी उत्साह पूर्णतया तर्क, अन्तर्दृष्टि और अध्ययन पर आधारित थे न कि कोरी भावुकता, वर्गीय संस्कारों या व्यक्तिगत दुखों-कष्टों पर। फिर भी वे कोई भावनाविहीन दार्शनिक, रूखे वैज्ञानिक, या इतिहास की चीर-फाड़ करने वाले निर्लिप्त अध्येता मात्र तो नहीं ही थे। उनके सभी निजी मित्र और उनका अपना जीवन इस बात का प्रमाण देते हैं कि वे अपने समकालीन डार्विन की भाँति एक विशेषज्ञ भर नहीं थे, अपितु प्रखर प्रतिभाशाली